Vol.10 August 17 No.1
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

पावन धाम

–महात्मा चैतन्यमुनि

प्रकृति व पुरुष
शाश्वत हैं, अनादि है
प्रकृति गति है
और पुरुष स्थिति है।
प्रकृतिनिष्ठ गति
पुरुषनिष्ठ स्थिति के धरातल पर
कार्यरत है.....
गति के आश्रय से
बाह्य जीवन पूर्ण हो सकता है
लौकिक सुख,
समृद्धि–वृद्धि,
ऋद्धि–सिद्धि.....।
गति ही जीवन का श्रम है
अभ्युदय का क्रम है....
स्थिति का आश्रय–
श्रम नहीं.... क्रम नहीं
निःश्रेयस पावन धाम है
यात्रा का विराम है
शान्ति है.... ज्ञान है।
आन्तरिक तृप्ति है
क्लेश मुक्ति है....।

स्व त न्त्र ता दिवस की शुभ काम नाएँ

महादेव, सुन्दरनगर, जिला मण्डी, हि.प्र.–175019

Brahmasha India Vedic Research Foundation acknowledges with thanks receipt of Rs. 5100/- from Sh. Shyam Sunder Mahajan, H.No. 732, Sec.-IV, Panchkula (Haryana)
Donations to the Foundation are eligible for Tax Exemption under section 80G of the Incom Tax Act 1960 vide No. DIT(E)1/3313/ DELBE 21670-2503210 dated 25.03.2010.

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. पावन धाम 2
–महात्मा चैतन्यमुनि
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 7
–डॉ. भारत भूषण
4. वेदों में विज्ञान के उद्घोषक : स्वामी दयानन्द (भाग-2) 9
–डॉ. महावीर मीमांसक
5. श्री चन्द्रशेखर 'आजाद' 15
–प्रियवीर हेमाइना
6. कश्मीर का यह संकट ही समाधान दे सकता है बशर्ते... 19
–अवधेश कुमार
7. वेदों में इतिहास नहीं है 24
8. थिंक टैंक राममनोहर लोहिया 26
9. भारत स्वातन्त्र्य और ऋषि दयानन्द 27
–सत्यप्रिय शास्त्री
10. Bhopal Engineering Students & Science of Veda 32
11. Gasping for a Solution 34

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
email:deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Website : www.thearyasamaj.org
of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar 0124-4948597
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta *V.President*
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer

Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

संपादकीय

क्या है नक्सलवाद का भविष्य?

आज पश्चिम बंगाल से लेकर छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र, तेलंगाना, ओडिशा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश तक 44 जिले नक्सलवाद से प्रभावित हैं। यहाँ कुछ समय पूर्व नक्सलियों ने कई बड़े हमले किए जिनमें लगभग 550 सुरक्षा बलों के जवान शहीद हो गए।

इस नक्सलवाद की शुरुआत आज से पचास वर्ष पूर्व 1967 में नक्सलबाड़ी गाँव से तब हुई जब शांति मुंडा नामक आदिवासी महिला ने पहला तीर चलाकर सोनम बांगड़ी (पुलिसवाले) को मौत के घाट उतार दिया। इसी के बाद धीरे-धीरे नक्सलवादी आंदोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया और देश के बड़े हिस्से को अपनी गिरफ्त में ले लिया। वस्तुतः नक्सलवादी आंदोलन की बुनियाद पश्चिमी बंगाल के कुछ वामपन्थियों ने रखी। इस आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में वामपंथी सुप्रसिद्ध लेखिका महाश्वेता देवी ने 'हजार चौरासी की माँ' नामक लोकप्रिय उपन्यास लिखा। शांति मुंडा के अनुसार इस आंदोलन के हिंसक रूप धारण कर लेने पर सरकार ने उस क्षेत्र के गाँवों के सभी पुरुषों को जेलों में डाल दिया, तब महिलाओं ने मोर्चा सँभाला। वे गाँव-गाँव घूमकर लोगों को उकसातीं और पुलिस तथा अफ़सरों का घेराव करतीं और मौका लगता तो उनकी राइफलें तक छीन लेतीं। लेकिन वे उन्हें घरों में घुसने नहीं देती थीं। 74 वर्षीय शांति मुंडा आज भी हटिगिशा नामक अपने पैतृक गाँव में उसी रौब के साथ रहती है। इस नक्सलवादी आंदोलन के मुख्य नायक चारु मजूमदार, कनु सान्याल और जंगल संथाल

आदि रहे हैं।

आज नक्सलवाद के खिलाफ़ चल रही सरकार की जंग निर्णायक मोड़ पर आ गई है। जिस नक्सल आंदोलन की बुनियाद ठीक पचास साल पूर्व देश में पड़ी थी, जिसके राजनीतिक-सामाजिक प्रभाव भी दिखाई दिए, बहुत-सी जानें भी गईं, परन्तु नक्सलियों पर लगातार बढ़ते दबाव और जनता के बीच इनके घटते समर्थन से नक्सली प्रभाव सिकुड़ता जा रहा है। अब नक्सलियों के विरुद्ध लड़ाई ऐसी स्थिति में है जहाँ इसके अन्त की संभावना दिखाई दे रही है। यह सब इस बात पर निर्भर है कि सरकार इस निर्णायक लड़ाई में भविष्य में कैसी नीति अपनाती है।

सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि नक्सलियों को मिलने वाले आर्थिक सहयोग और हथियारों की आपूर्ति पर रोक लगे। नब्बे के दशक में नक्सलियों को चीन से संसाधनों की आपूर्ति से भारी समर्थन मिला था जिससे इन का तेजी से प्रसार हुआ। बाद में सरकार ने इस पर रोक लगा दी। सरकार ने जिन एजन्टों के माध्यम से हथियारों या धन की आपूर्ति होती थी उनमें से अधिकांश को गिरफ्तार कर लिया या वे निष्प्रभावी हो गए। अब उन्हें संसाधनों के लिए देश के आन्तरिक स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ रहा है जिन पर नियंत्रण रखना आसान है।

नक्सल-आत्मसमर्पण नीति-

नक्सलवाद के प्रसार और उसके प्रभाव में सबसे मुख्य बात थी स्थानीय लोगों का समर्थन। इसका प्रतिरोध करने के लिए सरकार ने आत्म समर्पण करने वालों के पुनर्वास में सहायता का आश्वासन दिया। इसी योजना के तहत खतरनाक नक्सली कुंदन पाहन जैसों ने समर्पण किया। ध्यान रहे इन कमजोर पड़ते नक्सलियों को पूर्णरूप से

समाप्त मान लेना जल्दबाजी होगी। इस समय देश में इनके नेटवर्क के कमजोर पड़ने के स्पष्ट संकेत तो मिले हैं परन्तु इसी बीच दूसरे खतरनाक संकेत भी दिखाई दिए हैं। सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार आईएसआईएस और अलकायदा जैसे आतंकवादी संगठन देश में अपने पैर जमाने के लिए नक्सलियों के संपर्क में हैं।

नक्सलवाद का घटता प्रभाव-

सुरक्षा एजेंसियाँ नक्सल प्रभावित क्षेत्र को रेड कॉरिडोर (लाल पट्टी) के रूप में चिह्नित करती है। 2007 में 28 राज्यों के आधे क्षेत्र को रेड-कोरिडोर के प्रभाव क्षेत्र में रखकर नक्सल विरोधी आपरेशन चलाया गया।

2009 में यह घटकर 13 राज्यों के 180 जिलों तक सीमित हो गया। 2011 में यह क्षेत्र 11 राज्यों के 83 जिलों तक सीमित रह गया।

अभी भी 10 राज्य रेड कोरिडॉर में हैं- छत्तीसगढ़, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, झारखंड। इन राज्यों के 35 जिले सबसे अधिक नक्सल प्रभावित क्षेत्र हैं। जबकि शेष 50 जिलों में इनका प्रभाव लगातार घट रहा है।

नक्सलवाद के प्रभाव को कम करने के लिए क्षेत्र में विकास कार्यों को तेज करना होगा। नक्सल प्रभावित क्षेत्र में कुछ बातें समान हैं कि ये सभी जिले अति पिछड़े हैं, यहाँ सड़क, बिजली, पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। यहाँ स्कूल, अस्पताल भी नहीं है। इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखकर बड़े पैमाने पर सड़कों का निर्माण हो रहा है।

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-115)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

जन्म-मरण आदि की व्यवस्था के कारण आत्मा अनेक हैं, इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं। पर जन्म-मरण आत्मा का ही क्यों न माना जाए। इससे आत्मा की अनेकता में कोई बाध ा नहीं आती, अपितु इसकी पुष्टि ही होती है। अब प्रत्येक नए शरीर के साथ आत्मा भी नया हो। सूत्रकार इस आशंका का समाधान अगले सूत्र में करते हैं, सूत्र है-

उपाधिभेदेऽप्येकस्य नानायोग आकाशस्येव घटादिभिः।।115।।

अर्थः- (उपाधिभेदेऽपि) देह का नाश हो जाने पर भी (एकस्य) एक (आत्मा) का (नानायोगः) अनेक शरीरों के साथ संबंध होता है (आकाशस्येव) जैसे आकाश का (घटादिभिः) घट आदि के साथ।

भावार्थः- उपाधि अर्थात् शरीर के नाश हो जाने पर भी आत्मा का अस्तित्व बना रहता है या, उस आत्मा का आगे भी इसी प्रकार नाना शरीरों के साथ योग होता रहता है। जन्म के बाद जीवनकाल बीत जाने पर जब मरने का समय आता है, तब केवल शरीर नष्ट होता है। आत्मा शरीर को छोड़ देता है और उसके अस्तित्व के वहाँ कोई चिह्न नहीं रहते, तब उसे जला दिया जाता या जमीन में गाड़ दिया जाता अथवा पानी में बहा दिया जाता है। शरीर का प्रत्येक अंग अपने कारणों में लय हो जाता है पर आत्मा अलग बना रहता है और वही एक आत्मा उस शरीर को छोड़ जाने के बाद दूसरा शरीर धारण करता है। यह उसका जन्म कहा जाता है। जन्म के बाद फिर मरण आ जाता है और उसके बाद फिर वही आत्मा अन्य देह धारण कर लेता है। इस प्रकार एक आत्मा का नाना शरीरों के साथ संबंध होता है। जैसे किसी जगह एक घड़ा रखा है, वह आकाश से व्याप्त है, क्योंकि आकाश द्वारा अवकाश दिए बिना उसका अस्तित्व संभव नहीं। उस घड़े के नष्ट हो जाने के बाद

उसका स्थान दूसरा घड़ा ले लेता हैं। यहाँ घड़ा तो बदल गया है, परन्तु आकाश वही बना रहा। इस प्रकार एक ही आत्मा का नाना शरीरों के साथ संबंध होता रहता है। आत्मा शरीर के समान बनता-बिगड़ता नहीं, न वह कभी नया-पुराना होता है।

दी हिबिस्कस,
बिल्डिंग-5, एपार्ट नं.-9बी
सेक्टर-50, गुड़गाँव
(हरियाणा) 122009
फोन-0124-4948597

नृत्यु का भय

एक संसारी व्यक्ति नित्य एक संत के पास जाकर पूछता था "दुष्टता का नेरा स्वाभाव कैसे छूटेगा?" संत उसे टालते रहे। एक दिन उन्होंने उसकी हस्तरेखा को ध्यान से देखते हुए कहा, "अब तुम्हारा अंत निकट है। तुम्हारा जीवन एक महीने से अधिक न हो सकेगा।" वह व्यक्ति चिन्ता में डूब गया। एक महीना दुःख, भय, पश्चाताप व भजन में लगा रहा। भविष्य में होने वाली दुर्गति ही उसके मन में छाई रही। एक महीने में जब एक दिन शेष रहा तो संत ने उस व्यक्ति को बुलवाया और उससे पूछा, "इस एक महीने में कितनी बार दुष्टता की? कितने पाप किए?"

उसने उत्तर दिया, "एक बार भी पाप और दुष्टता का ख्याल नहीं आया। चित्त पर तो हर समय मृत्यु का भय छाया रहा। पाप की इच्छा कैसे उठती"

संत हंसने लगे बोले, "पाप से बचने का एक ही उपाय है। हर घड़ी मृत्यु को याद रखो और वह करने की सोचो जिससे भविष्य उज्ज्वल बने।" मृत्यु के टल जाने के अभय दान को पाकर वह व्यक्ति चला गया। अब उसके स्वाभाव नें दुष्टता नहीं थी। मृत्यु के स्मरण ने उसे निष्पाप बना दिया था।

वेदों में विज्ञान के उद्घोषक : स्वामी दयानन्द (भाग–2)

–डॉ. महावीर मीमांसक

निघण्टु में वेद की प्रामाणिक भाष्य पद्धति के व्याख्याता यास्क ने कहा है, "ईळिरध्येषणा कर्मा", अर्थात् ईळ् धातु अध्येषणार्थक है। अध्येषणा का अर्थ यास्क ने किया है। 'अध्येषणा सत्कार–पूर्वको व्यापारः', अर्थात् अध्येषणा का अर्थ है किसी वस्तु को उसी प्रकार के काम में लाना। यही अर्थ स्वामी दयानन्द ने भी किया है। यहाँ इस मंत्र का देवता (वर्णनीय विषय) अग्नि (भौतिक पदार्थ) को उसके गुण और क्रिया समझकर उसका उसी प्रकार का उपयोग करूँ। यहाँ अग्नि के कुछ गुण दिये हैं। यहाँ अग्नि को 'देवम्' कहा गया है, देव का अर्थ है प्रकाश और गति। (दिवु धातु द्युति और गति अर्थ वाली)। स्पष्ट है कि अग्नि के दो गुण प्रकाश और गति का भौतिक विज्ञान में अत्यधिक महत्त्व है। अग्नि के लिये एक और शब्द 'होतारम्' का यहाँ प्रयोग है जिसका अर्थ है ध्वनि करने वाला (ह्वेञ् शब्दे) तथा वस्तुओं को खाने या नष्ट करने वाला (हु दानादनयोः धातु)। अग्नि का विस्फोटक रूप तथा विध्वंसकारी ध्वनि सर्वविदित ही है तथा अग्नि अपने में डाली गयी प्रत्येक वस्तु को खा डालती, जला डालती या नष्ट कर डालती है। इसी प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त का पाँचवाँ मंत्र है– **'अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः। देवो देवेभिरागमत्।।** यहाँ भौतिक अग्नि के दो और विशेषणों का प्रयोग है। एक है कविक्रतुः जिसका अर्थ पारदर्शक कर्म वाला (कविः, क्रान्तदर्शी भक्त) (यास्क) (क्रतुः कर्मपर्याय)। अग्नि पारदर्शक होने से आधुनिक टेलिविजन,

एक्सरे आदि के काम में लाया जाता है। दूसरा गुण है 'चित्रश्रवस्तमः'। अग्नि अद्भुत तरीके से ध्वनि का श्रवण करवाता है, यह गुण टेलिफोन आदि के कार्यो को सम्भव बनाता है और संयोग आविष्कार का कारण बना है। हमने अग्नि आदि अनेक भौतिक पदार्थों के गुणों को भौतिक विज्ञान के सन्दर्भ में अपनी पुस्तक (ग्लोरियस विजिन आफ द वेदाज) में वर्णित किया है, जो हॉलैण्ड में छपी है, पाठक विस्तार से वहीं से देख सकते हैं।

वेद में सविता और सूर्य इन दो भिन्न-भिन्न शब्दों से सूर्य का वर्णन मिलता है। यह क्यों? सविता शब्द की व्युत्पत्ति सर्जनार्थक षुञ् धातु से है अतः सविता का अर्थ है सर्जन करने वाला। सविता सूर्य का वह रूप है जो सर्जन करने वाला है अतः सविता के वर्णन में सूर्य के सभी सर्जनात्मक रूपों का वर्णन है और सूर्य शब्द की व्युत्पत्ति है गत्यर्थक सृ धातु से जिसका अर्थ है गति देने वाला। अतः सूर्य के वर्णन में उन रूपों का समावेश है जो सूर्य के गतिप्रद रूप हैं। इसी प्रकार किरणों के 15 नाम निघण्टु में दिये हैं जो किरणों के भिन्न-भिन्न स्वरूपों के निदर्शक हैं। आधुनिक विज्ञान को अभी तक सात प्रकार की किरणों पर शोध करके पता लगाने की आवश्यकता है। इसी प्रकार यास्क ने वैदिक निघण्टु में पानी के एक सौ नाम दिये हैं जो पानी के भिन्न-भिन्न स्वरूपों के वाचक हैं। अभी तक पानी के रूप, पानी, बादल, भाप, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन आदि ही ज्ञात हैं, शेष पानी के कौन से रूप हैं? शोध करके पता लगाने की आवश्यकता है। वैदिक देवता मरुत और वायु आदि में भी मौलिक अन्तर है, ये एक ही भौतिक पदार्थ के पर्यायवाची शब्द नहीं है। इस प्रकार वैदिक भौतिक विज्ञान का केवल

एक ही और आधुनिकतम उदाहरण देकर अपनी लेखनी को विराम देंगे।

आइन्सटाइन आधुनिक युग के महान् वैज्ञानिक माने जाते हैं। उन्होंने देश और काल (टाइम एण्ड स्पेस) के विषय में भौतिक विज्ञान के अद्‌भुत सिद्धान्तों का अविष्कार करके सृष्टि-विज्ञान की नई व्याख्या प्रस्तुत की। आइन्सटाइन को अभी-अभी मात दी है स्टीफन्स हौकिंग ने। स्टीफन हौकिंग की आधुनिकतम वैज्ञानिक खोज यह है कि प्रलय काल में भी समय की सत्ता रहती है। यह तथ्य उन्होंने अपने आध ुनिक वैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर नये फार्मूले पेश करके सिद्ध किया है। प्रलय-अवस्था के काल की गणना करने के फार्मूले भी उन्होंने दिये हैं। इसी अपनी वैज्ञानिक नई खोज का बड़ा रोचक वर्णन उन्होंने अपनी पुस्तक "स्टोरी आफ क्रियेशन : फ्राम बिग-बैंग टु बिग क्रंच" में बड़े विस्तार से किया है।

यह वैज्ञानिक तथ्य वेद में पहले से ही वर्णित है। यह हमने खोजा है। ऋग्वेद के चार सूक्त अर्थात् मंडल 10, सू. 129, 130, 154, 190, ये चार सूक्त भाववृत्तम् नाम से प्रसिद्ध हैं क्योंकि इन चारों सूक्तों में सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय अवस्था का वर्णन है, अतः ये चारों सूक्त ऋग्वेद के सृष्टि-विज्ञान के सूक्त कहे जाते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि सृष्टि विज्ञान के विषय पर स्टीफन्स हौकिंग की पुस्तक (स्टोरी ऑफ क्रियेशन) का नाम भी यही 'भाववृत्तम्' बनता है। लगता है (स्टोरी ऑफ क्रियेशन) 'भाववृत्तम्' का ही अनुवाद हो, यह अद्‌भुत संयोग ही कहा जा सकता है। अस्तु, ऋग्वेद के प्रथम भाववृत्तम् सूक्त के नाम अर्थात् 10

वें मण्डल का 129 वाँ सूक्त, जो नासदीय सूक्त से भी जाना जाता है, इन शब्दों से प्रारंभ होता है–नासदासीन्नो सदासीत्तदानीम्। मन्त्र के इस प्रथम चरण में सृष्टि के पहले प्रलय अवस्था का वर्णन है जिसमें कहा गया है कि प्रलय अवस्था में सत् और असत् दोनों ही नहीं थे। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 'सत्' और 'असत्' में दोनों ही वैदिक शब्द बड़े वैज्ञानिक तकनीकी अर्थ में प्रयुक्त हैं जिनकी व्याख्या का यहाँ अवकाश नहीं है। यहाँ हम यह बतलाना चाह रहे हैं कि उस प्रलयावस्था में जिस अवस्था का वर्णन यहाँ ऋग्वेद में 'सत्' और 'असत्' के अभाव के रूप में किया है, एक पदार्थ का भाव स्पष्ट माना है और वह है काल, जिसे 'तदानीम्' शब्द में विज्ञात घोषित किया है। 'तदानीम्' अर्थात् उस समय, जब 'सत्' और 'असत्' भी नहीं थे, किन्तु समय (काल) था। स्टीफन्स हौकिंग और आइन्सटाइन की काल सम्बन्धी प्रमुख खोज को वेद ने एक ही सहज और सरल शब्द 'तदानीम्' से बतलाकर धराशायी कर दिया। वैदिक विद्वानों का अभी तक समूचे भाववृत्त सूक्त की वैज्ञानिक व्याख्या तथा इस मन्त्र की इस व्याख्या पर ध्यान नहीं गया है। प्रलय अवस्था में काल की सत्ता और प्रलय अवस्था के काल की गणना, जो एक अत्यन्त कठिन वैज्ञानिक चुनौती है, भारतीय दर्शनों में बड़े विस्तार से दी गई है। प्रलय अवस्था में सूर्य के अभाव में काल गणना का मापक–दण्ड या साधक यन्त्र क्या हो, यह बड़ी वैज्ञानिक समस्या है, किन्तु प्राचीन भारतीय ऋषियों ने इस गुत्थी को बड़े वैज्ञानिक तरीके के सफल रूप से सुलझाया है। इसका उद्घाटन हम अन्य लेख में विस्तार से करेंगे। खगोलशास्त्र के आधुनिक वैज्ञानिक कार्ल सागम

ने इस तथ्य की पुष्टि को 'हिन्दुस्तान टाइम्स' से 26 जनवरी 1997 को छपे अपने साक्षात्कार में बड़े प्रशंसनीय शब्दों में स्वीकारा है। यहाँ यह सब लिखना सम्भव नहीं है। स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में सृष्टिविद्या विज्ञान के प्रसंग में प्रलयकाल की सीमावधि भी वैदिक विज्ञान के आधार पर लिखी है।

इस खोजपूर्ण तथ्य के उद्घाटन के साथ ही हम अपना लेख समाप्त करने से पहले 21वीं सदी और स्वामी दयानन्द द्वारा घोषित वैदिक विज्ञान की याद दिलाना चाहेंगे। 21वीं सदी पश्चिम के विज्ञान की आँधी और तूफान लेकर विश्व में आयेगी। वैज्ञानिक आविष्कार प्रकृति के रहस्यों को खोलकर रख देंगे। भौतिक विज्ञान की उपलब्धियाँ मानव को इतना साधन सम्पन्न बना देंगी कि जीवन के तौर-तरीके सर्वथा बदल जायेंगे। समाज और राष्ट्र का एक नया भौतिक रूप उभरकर सामने आयेगा। आधुनिक इंफार्मेशन टैक्नोलॉजी, इंटरनेट, रोबोट, शरीर विज्ञान की नई खोजें आने वाले समय का पूर्वाभास करवा रही हैं। ऐसे समय में समूचे भारत राष्ट्र की परिचायक सत्ता का प्रश्न होगा। वेद और प्राचीन भारतीय शास्त्रों का ज्ञान-विज्ञान पश्चिम की इस आँधी के साथ टक्कर लेने और उसमें अपना योगदान देने की पूरी क्षमता रखते हैं। देश की गरिमा को वैदिक ज्ञान-विज्ञान के सर्वोपरि स्थान पर रख पायेगा। यही देश और समाज की सबसे महत्त्वपूर्ण धरोहर होगी जिस पर राष्ट्र गर्व करके पश्चिम के भौतिक अंधकार में सूर्य के समान विश्व को प्रकाश दिखला सकता है। स्वामी दयानन्द जी महाराज का वेदों में विज्ञान यह उद्घोष ऐसे समय में वैदिक ज्ञान-विज्ञान

की खोज करके मानव मात्र का प्रकाश स्तम्भ बन सकता है जिससे राष्ट्र और वेद की पताका सर्वोपरि लहराती रहे और आधुनिक भौतिक विज्ञान में अपने आपको भूलते हुए मानव को ज्ञान-विज्ञान की चरम पराकाष्ठा आध्यात्मिक चेतना की याद दिलाती रहे, जो अखण्ड समष्टि के दर्शन की समूची वैज्ञानिक व्याख्या है। भौतिक विज्ञान की पूर्ति के लिये अध्यात्म विज्ञान का जोड़ना स्वामी दयानन्द के अद्‌भुत योगदान है।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में स्वामी दयानन्द के अनुसार समग्र भौतिक विज्ञान का पर्यवसान इसी आध्यात्मिक चेतना के विज्ञान में होता है जो वेदों में मानवीय चेतना का अन्तिम लक्ष्य कहा गया है। आध्यात्मिक विज्ञान के बिना केवल भौतिक विज्ञान ऐसे ही अर्थहीन, पंगु और अधूरा है जैसे शरीर विज्ञान चेतन-जीव विज्ञान के बिना निष्प्रयोजन और असंगत है, क्योंकि चेतना के बिना जीवन की व्याख्या अधूरी और अप्रासंगिक है और केवल भौतिक शरीर मृत और मिट्‌टी है। चेतनता की सुरक्षा ही शरीर विज्ञान का ध्येय है। भौतिक विज्ञान बाह्य पदार्थ-विषयक (आब्जेक्टिव) है तो आध्यात्मिक विज्ञान अन्तश्चेतन तत्व विषयक (सब्जैक्टिव) है स्वयं ज्ञाताविषय है जहाँ सब्जैक्ट ही ऑब्जेक्ट बन जाता है। यह वैयक्तिक चेतना विज्ञान अन्ततोगत्वा सामष्टिक चेतना का बोध करवाती है जो अनन्त और सर्वनिरपेक्ष की स्थिति है। भौतिक विज्ञान के ऊपर यह पराविज्ञान (सुपर साइंस) है। ये दोनों मिलकर सर्वांगीण विज्ञान बनते हैं जिसे वेद के माध्यम से स्वामी दयानन्द आधुनिक भौतिक विज्ञान को देना चाहते हैं।

वैदिक शोध सदन, ए-3/11,
पश्चिम विहार, दिल्ली-110063

श्री चन्द्रशेखर 'आजाद' - जिनके सिंह-पराक्रम से ही काँपती थी अंग्रेज सरकार

-प्रियवीर हेमाइना

वसुमति वसुन्धरा धरती माता आदिकाल से ही अनेक नररत्नों को अपने गर्भ में धारण करती चली आई है, इस बारे में संस्कृत-साहित्य में लिखा है-

दाने तपसि शौर्य च विज्ञाने विनये नये।
विस्मयो न हि कर्त्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा।।

दान, तपस्या, शौर्य, विज्ञान, विनम्रता और नीति में यह वसुन्धरा एक नहीं, अनेक रत्नों को धारण करने वाली है। सन् 1921 में ये वो दिन थे जब पूरे देश में अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध एक लहर-सी दौड़ रही थी। देश के युवा लुटेरे जालिम अंग्रेजों को सात समुद्र पार खदेड़कर स्वाधीन होने के लिए बेचैन थे।

बनारस के गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज में कुछ देशभक्त युवकों को जब वे धरना दे रहे थे, उनको गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हीं में से एक छोटे-से बालक को नारे लगाते देख, पुलिस वालों का खून-खौल उठा। एक पुलिस वाले ने तमाचा मारते हुए उसे हथकड़ी भी पहना दी। पुलिस उसे घसीटती हुई कोर्ट ले गई। उसे कोर्ट में अंग्रेज जज के सामने पेश किया गया और मात्र 'भारत माता की जय' बोलने के अपराध में उसने उसे कोड़ों की सजा दी।

कोड़े खाकर वह वीर आग का गोला बनकर धधक उठा। उसने वहीं भरी अदालत में यह प्रतिज्ञा की कि जब तक ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दूँगा तब तक चैन से नहीं बैठूँगा। तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारे पिता का नाम क्या है? तुम्हारा निवास स्थान कहाँ है? ये तीन प्रश्न चौदह-वर्षीय बालक से बड़े ही रौबीले स्वर में जब मजिस्ट्रेट ने पूछे तो उसने उत्तर में कहा मेरा नाम है - "आजाद!" "आजाद!!" "आजाद!!!" "स्वाधीन!!!" और मेरा निवास स्थान है- "जेलखाना! या कहना चाहिए कारागार! कारागार!! कारागार!!!"

उस अल्पायु बालक के इन उत्तरों को ज्यों ही सुना अदालत ने दाँतों तले अँगुली दबा ली, और उसने आज्ञा दी- इस दीवाने को पन्द्रह बेंतें और लगाई जायें। पर इससे भी वह यज्ञोपवीतधारी देशभक्त दीवाना भला कहाँ डरने वाला था? उसी समय देखते ही देखते कोमल शरीर पर तड़ातड़ बेंतें पड़ने लगीं, पर उस बालक के मुख से आह तक न निकली। वह वीर-धीर बालक प्रत्येक बेंत के आघात पर बस यही उद्घोष करता रहा-'वन्दे मातरम्!", "भारतमाता की जय"। "भारतमाता की जय!!" उस वीर-धीर बालक का नाम था 'चन्द्रशेखर'। इसी लोमहर्षक घटना के बाद बालक का यही नाम उसका उपनाम बना और कालांतर में यही 'आजाद' उपनाम, सुनाम बनकर सदा-सदा के लिए अमर हो गया। उन 15 बेंतों के प्रत्येक आघात ने चन्द्रशेखर के बालहृदय को अंग्रेजों के प्रति घृणा से भर दिया। बालक चन्द्रशेखर ने विदेशी अत्याचारी अंग्रेजों के साम्राज्य को देश से उखाड़ फेंकने का दृढ़ संकल्प कर लिया। दिन-रात वह यही सोचा करता था कि कैसे इन अंग्रेजों को यहाँ से खदेड़ा जाए! फरार होकर आजाद उस बम पार्टी में सम्मिलित हो गया जो देश को स्वतन्त्र कराने के लिए भारत में काम कर रही थी, जो देश से अंग्रेजी शासन को सशस्त्र क्रांति के बल पर उखाड़ फेंकना चाहती थी। रामप्रसाद 'बिस्मिल', राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाक़ उल्ला खाँ, सचीन्द्रनाथ सान्याल जैसे नौजवान इसी दल के सदस्य थे जो सिर पर कफन बाँधकर अंग्रेजी सरकार से लोहा लेने के लिए प्रयत्नशील थे। यह दल वही था जो बमों, पिस्तौलों और बन्दूकों से पराधीनता के जुए को उतार फेंकना चाहता था। सशस्त्र क्रान्ति के आयोजन के लिए दल को भारी मात्रा में धन की आवश्यकता थी। उस समय के पूँजीपति हृदय से अंग्रेजों के भक्त थे, इसीलिए क्रान्तिकारियों को उनसे धन की सहायता की आशा नहीं थी। अन्ततः लाचार होकर क्रान्तिकारियों ने डाका डालकर धन प्राप्त करने का मार्ग अपनाया। क्रान्तिकारियों ने शाहजहाँपुर के पास

काकोरी रेलवे-स्टेशन के निकट ट्रेन रोककर सरकारी खजाने को लूट लिया। इससे अंग्रेजी सरकार दहल गई और भय से काँप उठी।

अंग्रेजी सरकार ने इस ऐतिहासिक ट्रेन डकैती काण्ड के प्रायः सभी अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया, किन्तु चन्द्रशेखर आजाद उनके हाथ न आ सका क्योंकि उसकी तो प्रतिज्ञा ही यह थी कि फिरंगी मुझे जिन्दा न पकड़ सकेंगे।

सन् 1929 में वाइसराय की गाड़ी पर बम फेंकने की योजना में भी आजाद की भूमिका प्रधान रूप में थी। भगतसिंह और सुखदेव को जेल से छुड़ाने की योजना भी आजाद ने रची थी परन्तु देश का दुर्भाग्य या अंग्रेजों का सौभाग्य था कि वह योजना असफल हो गई। जब दल के ही कुछ गद्दारों के कारण रामप्रसाद 'बिस्मिल' और अशफाकउल्ला जैसों को फाँसी पर चढ़ना पड़ा। देश के वे दीवाने हँसते-हँसते फाँसी के फंदे पर झूल गये। बिस्मिल और अशफाक के बाद सुखदेव, भगतसिंह और राजगुरु भी 23 मार्च 1931 को फाँसी पर चढ़ गये। सतलुज के तट पर आज भी उनकी राख गरम है। स्वतंत्र भारत के आकाश में इन शहीदों के रक्त की लाली है। 7 अक्टूबर 1930 को जिस दिन भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी की सजा सुनाई गई, उस दिन 'आजाद' बहुत ही क्षुब्ध हो उठे थे।

'आजाद' सन् 1930 के अन्त में कानपुर को छोड़कर इलाहाबाद चले गये। इलाहाबाद में ही एक दिन सुबह जब पण्डित जवाहरलाल नेहरु आनन्द भवन के अपने कमरे में लेटे हुए थे, सहसा ही उनके कक्ष का द्वार खुला। जवाहरलाल ने देखा कि एक हृष्ट-पुष्ट तेजस्वी नौजवान सामने खड़ा है।

उस युवक ने गम्भीरता से कहा- "मेरा नाम चन्द्रशेखर 'आजाद' है। मैंने आज तक जो कुछ भी किया है, वह देश की आजादी के लिए किया है। मैंने उनका ही खून बहाया है जो भारत की स्वतन्त्रता के शत्रु थे। इस समय मैं पुलिस से चारों ओर से घिरा हुआ हूँ, पुलिस मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ी है, आप बताएँ कि मैं क्या करूँ?"

जवाहरलाल युवक का मुँह देखते रहे, वे उसे कुछ उत्तर न दे सके। 'आजाद' पाँच मिनट तक नहीं मिला तो दरवाजे से बाहर निकल आये। और उसके दो घण्टे बाद ही जवाहरलाल ने सुना कि चन्द्रशेखर 'आजाद' अब इस दुनिया में नहीं है। अल्फ्रेड पार्क में वे पुलिस की गोलियों का मुकाबला करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये।

हा हन्त! 27 फरवरी सन् 1931 का वह दुर्भाग्यपूर्ण दिन! जब दस बजे प्रयाग के अल्फ्रेड पार्क में भारत माँ का वह सपूत 'आजाद' पुलिस से चारों तरह से घिर गया। आजाद राम नाम का तहमद बाँधे नंगे बदन थे और उनकी कटि में पिस्तौल बँधी थी। जब अनगिनत पुलिस वाले उनके सामने बन्दूक और पिस्तौल तानकर गोलियाँ चलाने लगे तो 'आजाद' ने भी अपनी कमर से पिस्तौल निकाली और एक पेड़ की आड़ लेकर गोलियों के जवाब में गोलियाँ चलानी शुरु कर दी। उसकी माउज़र पिस्तौल में केवल बारह गोलियाँ थीं, पर उसकी एक-एक गोली का निशाना इतना अचूक था कि यदि पुलिस पेड़ों की आड़ में न होती तो आजाद की बारह गोलियों से कितने ही पुलिस वाले मौत के घाट उतर जाते।

अंत में जब आजाद की पिस्तौल में केवल एक ही गोली बची तो उसने कहा- 'आजादं' आजाद रहेगा, वह अंग्रेजों की गोली से नहीं, अपनी ही गोली से मरेगा, और फिर अपने मस्तक में गोली मारकर भारतमाता का वह सपूत चिरनिद्रा में सो गया।

आजाद भारत में सब कुछ है पर आज भी भारतमाता की आँखें गीली हैं। वह अल्फ्रेड पार्क के फूलों में आज भी अपने 'आजाद' को ढूँढ रही हैं। न जाने कब माँ भारती का वह वीर सपूत चिरनिद्रा से जागेगा?

318, विपिन गार्डन, उत्तम नगर
नई दिल्ली-110059
मो.-7503070674

कश्मीर का यह संकट ही समाधान दे सकता है बशर्ते

–अवधेश कुमार

समस्याएँ, संकट या चुनौतियाँ हमें परेशान जरुर करती हैं, लेकिन कई बार उन्हीं से ऐसे समाधान भी निकल जाते हैं जिनकी हम कल्पना नहीं करते। हाँ, यह तभी संभव है जब हम संकट को समाधान की दृष्टि से देखें और लाख विरोधों, आलोचनाओं के बावजूद उस पथ पर डटे हुए आगे बढ़ते रहें। कश्मीर के वर्तमान संकट को लेकर केन्द्र एवं राज्य सरकार की परेशानियाँ समझ में आती हैं। लेकिन इसके साथ कुछ ऐसी बातें भी हो रही हैं। जो इससे पहले कभी नहीं हुई और उनसे ही आशा की किरण झलक रही है। इसमें तो दो राय नहीं कि 8 जुलाई को आतंकवादी बुरहान वानी और उसके दो साथियों के मुठभेड़ में मारे जाने के बाद जो हिंसा एवं उपद्रव आरंभ हुआ वह अवांछित था। 2010 नें चार लोगों के गलत तरीके से मारे जाने का मामला था और उसको आधार बनाकर हिंसा कराने वालों को अपने पक्ष में कुछ तर्क भी मिल सकता था। इस बार आतंकवादी के मारे जाने का मामला है। चाहे अलगाववादी जो तर्क दें, पूरे देश और दुनिया के स्तर पर भी लोगों को यही लग रहा है कि ये सब आतंकवादियों के समर्थक हैं। इसलिए उनके प्रति पाकिस्तान के घड़ियाली आँसू के अलावा किसी की सहानुभूति नहीं हो सकती। यहाँ तक कि हुर्रियत से बातचीत का सुझाव देने वाले भी सार्वजनिक तौर पर नहीं कह सकते कि आतंकवादी का मारा जाना गलत था और इसलिए आपका गुस्सा जायज है।

हुर्रियत या अलगाववादी समस्या के मूल में हैं। कश्मीर में

आतंकवाद और हिंसा के पिछले ढाई दशकों के इतिहास में अलगाववादी इस बार जितने नंगे हुए हैं उतना पहले कभी नहीं हुए। मीडिया की कृपा से उनकी पूरी कलई खुली है। उन पर आम जनता के कर की भारी रकम लंबे समय से खर्च की जा रही है, पर देश के सामने उसका एक-एक पक्ष इस तरह कभी खुल कर सामने आया नहीं था। जिस ढंग से इस विषय को रखा गया उससे देश का माहौल यह बना है कि अरे, ये हमारे पैसे पर ऐश करते हैं और हमारे देश को ही गाली देते हैं! बंद करो इनको धन देना, रोक दो इनकी सुविधाएँ....। यह माहौल भारत में इससे पहले कभी नहीं बना था। ये भी अच्छा हुआ कि सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल के कुछ सदस्य इनके दरवाजे खटखटाने पहुँच गए और इन्होंने उनसे बातचीत नहीं की। बहुमत जनता ने उन छः सांसदों के इस व्यवहार को ठीक नहीं माना, लेकिन हुर्रियत के नेताओं के इस व्यवहार ने उनके खिलाफ आक्रोश को और घनीभूत कर दिया। कभी यह कल्पना नही की जा सकती थी कि पीडीपी और महबूबा मुफ्ती खुलकर हुर्रियत की आलोचना करेंगी। आप देख लीजिए, महबूबा कह रहीं हैं मेहमान को दरवाजे से वापस करके इन्होंने उनका नहीं अपना अपमान किया है। महबूबा ने तो यहाँ तक कह दिया कि ये गरीब के बच्चों के हाथों में पत्थर पकड़ाते हैं और वे मरते हैं, अगर पत्थरबाजों में इन के बच्चे मरे या घायल हुए हों तो मैं राजनीति छोड़ दूँगी। महबूबा का यह रुख असाधारण है। उनका और उनकी पार्टी की सोच अलगाववादियों के प्रति नरमी और सहानुभूति की रही है।

हुर्रियत के इसी व्यवहार ने नरेन्द्र मोदी सरकार के इस निर्णय को बल प्रदान किया कि उनसे बात नहीं करनी है।

गृहमंत्री राजनाथ सिंह को जम्मू में यह कहने का अवसर मिल गया कि ये कश्मीरियत, जम्हूरियत और इन्सानियत तीनों में विश्वास नहीं करते। राजधानी दिल्ली में सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल की बैठक के बाद सरकार ने साफ किया कि जो बात करने के इच्छुक हैं उनसे बात की जाएगी लेकिन देश की संप्रभुता से कोई समझौता नहीं किया जाएगा। हालांकि महबूबा मुफ्ती ने भी पीडीपी के अध्यक्ष के रुप में हुर्रियत नेताओं को पत्र लिखकर सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल से बात करने को आमंत्रित कर दिया था, लेकिन उनको भी पता था कि वे नहीं आने वाले। जाहिर है, अब उनके खिलाफ कोई कार्रवाई होगी तो महबूबा भी उनके साथ खड़ी नहीं हो सकतीं। पहली बार इतनी गहराई से एनआईए हुर्रियत नेताओं सहित कइयों के लेनदेन की जाँच कर रही है जिनमें सैयद अली शाह गिलानी का बेटा भी है। हवाला से धन का भी खुलासा हो जाए तो इनका पक्ष और कमजोर होगा।

अन्य दलों और समूहों ने जो बातें रखीं उनकी सूची देखें तो उसमें पुरानी बातें ही है अफस्फा हटे, पैलेट गनों का प्रयोग बंद हो, राजनीतिक समाधान हो, ज्यादा स्वायत्तता मिले.... आदि आदि। सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल से राजनाथ सिंह दो बार श्रीनगर जाकर राजनीतिक दलों और नागरिक समूहों से मिल चुके थे। जम्मू-कश्मीर का सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल प्रधानमंत्री से भी आकर अपनी बात रख चुका था। तो सरकार के सामने यह साफ था कि वहाँ के दल क्या चाहते हैं और समस्या क्या है? आज का सच यह है कि किसी दल या समूह ने वर्तमान संकट या कश्मीर समस्या के समाधान का कोई ठोस हल नहीं दिया। यानी सब अंधेरे में तीर चला रहे हैं। वर्तमान हिंसा दक्षिण कश्मीर

के मूलतः चार जिलों तक सीमित है। उसे विस्तारित करने की कोशिशें हो रहीं हैं और उनके भय से गाँवों में भी लोग इनकी सभाओं में आ रहे हैं। किंतु यह स्थिति किसी समय बदल सकती है।

लंबे समय बाद पाकिस्तान ने कश्मीर पर पुरानी उग्रता दिखाकर भारत भर में गुस्सा पैदा किया है और यह धारणा पुष्ट हुई है कि जो कुछ हो रहा है उसके पीछे पाकिस्तान है। 2010 और 2008 की हिंसा के समय पाकिस्तान का ऐसा रुख नहीं था। पाकिस्तान ने अपने व्यवहार से कश्मीर पर दिखावे के लिए भी बातचीत की संभावना पर तत्काल विराम दे दिया है। इसे अच्छा ही मानना चाहिए। कश्मीर का संकट इसलिए अनसुलझा रहता था कि हम कभी पाकिस्तान से बातचीत की भावुकता में फँसते थे तो कभी हुर्रियत का मत समझने की कोशिशों में। माकपा के सीताराम येचुरी और उनके जैसे कुछ नेता भले ही हुर्रियत और पाकिस्तान में बातचीत की वकालत करें, इस राय का भारत में आज कोई खरीदार नहीं है। वैसे भी जो नेता देशद्रोही नारा लगाने वालों के खिलाफ खड़े हो सकते हैं, उनको हीरो बना सकते हैं उनसे हम कश्मीर मामले पर माकूल कठोर कदम के समर्थन की उम्मीद नहीं कर सकते।आज सरकार के पास उनको जवाब देने का आधार है कि ये हुर्रियत नेता ज़ब आपसे बात को तैयार नहीं हुए, पाकिस्तान जब कश्मीर में आग लगाने पर तुला है तो उसका सामना करें कि बात करें। सरकार ने आजादी के बाद पहली बार गिलगित बलटिस्तान सहित पाक अधिकृत कश्मीर पर खुलकर हक जताया है। पाकिस्तान से पूछकर कि आप इसे कब खाली कर रहे हैं कश्मीर समस्या के स्वरुप को बदलने की रणनीति अपनाई है। बलूचिस्तान के बारे में प्रधानमंत्री के एक वक्तव्य ने

बलूच राष्ट्रवाद की ज्वाला को फिर से प्रज्वलित कर दिया है। भारत जहाँ तक आगे बढ़ गया है उसमें पीछे हटने की संभावना फिलहाल नहीं है। इसमें केन्द्र सरकार को अपने नजरिए से पहल करने या कदम उठाने में बहुत ज्यादा समस्या नहीं है। वैसे भी 2014 के आम चुनाव में कश्मीर भी एक प्रमुख मुद्दा था और नरेन्द्र मोदी को जनादेश इसके अपने दृष्टिकोण से समाधान के लिए मिला था। लोकतंत्र में आप सर्वदलीय बातचीत करें, प्रतिनिधिमंडल ले जाएँ, सबसे विचार करें, यहाँ तक कोई समस्या नहीं है, लेकिन अपेक्षा यही होगी कि आप अपना दृष्टिकोण साफ रखें और बिना किसी हिचक के कदम उठाएँ। यह संकट वाकई समाधान का आधार बन सकता है। वर्तमान संकट या पूरी कश्मीर समस्या सैन्य-राजनीतिक समस्या है और इसका समाधान इसी रास्ते हो सकता है। सरकार हिंसा रोकने के लिए कठोर कदम उठाए, हुर्रियत की सारी सुविधाएँ वापस लें, धन के स्रोतों की जाँच कर उनके रोजगार के लिए जो आर्थिक राजनीतिक निर्णय करने हों वह भी करें। दूसरी ओर बलूचिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर पर तीव्र कूटनीति से पाकिस्तान को उलझने को मजबूर करें। किंतु इन सबके लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। परिस्थितियाँ आपके पक्ष में हैं, कुछ विरोधी खड़े हो सकते हैं, मानवाधिकार के नाम पर छातियाँ पीट सकते हैं कुछेक नेता संसद में हंगामा करने की कोशिश कर सकते हैं.... इनसे प्रभावित हुए बिना सरकार को काम करना होगा। फिर देखिए जो कुछ वर्षों में नहीं हुआ वह चमत्कार हमें देखने को मिल सकता है।

ई-30, गणेश नगर,
पांडव नगर कॉम्प्लेक्स,
दिल्ली-110092

वेदों में इतिहास नहीं है

चूँकि वेद सृष्टि के आरम्भ में प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान है, इसलिए वेदों में लौकिक इतिहास संभव नहीं है। वेदों में जो लौकिक इतिहास भासित होता है, उसके दो कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि वेदों के शब्दों को लेकर ही संसार के मनुष्यों एवं पदार्थों का नामकरण किया गया, जैसा कि मनु का यह कथन है

सर्वेषां तु नमानि कर्मानि च पृथक्-पृथक्।
वेदशब्देभ्यः एवादौ पृथक् संस्था च निर्ममे।।

अर्थात् आदि में वेद के शब्दों को लेकर ही सभी पदार्थों के नाम और कर्म की पृथक्-पृथक् संज्ञा दी गई। इसलिए यदि वेदों में किसी व्यक्ति या नदी आदि का नाम दिखता है तो इसका अर्थ यह नहीं कि उस व्यक्ति या नदी आदि का इतिहास उसमें लिखा है, बल्कि उससे यह ध्वनित होता है कि वेदों के उन शब्दों से व्यक्ति या नदी आदि का नामकरण किया गया है। उदाहरण के लिए मेरा नाम सूर्य है और वेदों में भी सूर्य शब्द है। इसका अर्थ यह नहीं है कि मेरा इतिहास वेदों में है, बल्कि यह अर्थ है कि वेद के सूर्य शब्द को लेकर मेरा नामकरण किया गया है। ऐसा ही सर्वत्र समझना चाहिए। इस सम्बन्ध में वेद भी यही कहते हैं- **'देवो देवानाम् गुह्यानि नाम ऽऽ विष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे** (ऋ.9/95/2) अर्थात् परमात्मा ने भूमि आदि को उत्पत्ति के साथ-साथ लोक में उनके सारे नाम प्रकट किए। मीमांसकों के इस कथन **"य एव लौकिकास्स एव वैदिकाः'** का तात्पर्य भी यही है कि लोक में जो प्रचलित शब्द हैं वेदों से आए हैं। अन्तर कंवल इतना ही है कि वैदिक शब्दों की आनुपूर्वी नित्य होती है और वे अर्थ की दृष्टि से व्यापक होते हैं, जबकि लौकिक शब्दों की आनुपूर्वी अनित्य

होती है, वे संकुचित अर्थ में होते हैं। उदाहरण के लिए वैदिक शब्द अश्व एवं अप्सरा लोक में भी प्रचलित हैं। लौकिक शब्द अश्व से यहाँ घोड़ा नामक पशु का ही बोध होता है, वहीं वैदिक शब्द अश्व **'आशु गच्छति इति अश्वः'** के अनुसार विद्युत, किरण, घोड़ा, यान आदि सभी शीघ्रगामी पदार्थों का बोध कराता है। इसी तरह लौकिक शब्द अप्सरा से जहाँ केवल नृत्यांगना का बोध होता है, वहीं वैदिक शब्द अप्सरा **'अप्सु सरन्ति इति अप्सरा विद्युत्'** के अनुसार जल में संचरण करने वाली विद्युत् का बोध कराने के साथ ही प्रकरण के अनुसार जल में संचरण करने वाले अन्य पदार्थों का भी बोध करा जाता है। इस तरह वेदों में आगत शब्दों के बारे में जो व्यक्ति इस तथ्य को समझ लेता है, वह वेदों में इतिहास खोजने में अपना समय व्यर्थ नहीं गँवाएगा।

वेदों में इतिहास भासित होने का दूसरा कारण यह है कि वेद के शब्दों को रुढ़ि मान लिया जाता है जबकि वे यौगिक या योगरुढ़ि होते हैं, रुढ़ि नहीं। यौगिक का अर्थ यह है कि किसी शब्द के मूल धातु के अर्थ के आधार पर व्युत्पत्तिपरक उस शब्द का अर्थ लिया जाएगा, केवल शब्द के बाह्य स्वरूप को देख कर नहीं। जिस प्रकार किसी फल को देखकर उसके मिठास या खठास का ज्ञान नहीं हो पाता है, उसे छीलकर, काटकर एवं खाकर ही उसके गुणों को जाना जा सकता है, उसी प्रकार किसी शब्द के अन्दर तक पहुँचे बिना उस शब्द का सही अर्थ नहीं जाना जा सकता है। चूँकि वेद के प्रत्येक शब्द का अर्थ उस शब्द के अन्दर ही निहित है, इसलिए शब्द के अन्दर घुसकर ही उस शब्द के अर्थ को जाना जा सकता है।

थिंक टैंक राममनोहर लोहिया

जाने-माने समाजवादी नेता और स्वतंत्रता सेनानी राममनोहर लोहिया जी के कुछ विचार-

• जिंदा कौमें पाँच साल तक इंतजार नहीं करतीं।

• आजाद हिन्दुस्तान में हर आदमी राजा है। चाहे वह मर्द हो या फिर औरत। औरतें भी अपने हक से राजा होंगी, राजा की पत्नी होने के नाते रानी नहीं।

• भारतीय नारी का आदर्श सावित्री नहीं हो सकती, जिसका एकमात्र गुण उसकी पतिनिष्ठा है। आदर्श द्रोपदी होना चाहिए, जो क्रियाशील है, विद्वान है और कृष्ण के साथ बराबरी का सखा-सम्बन्ध रखती है।

• यौन-शुचिता महिलाओं पर ही क्यों लादी जाती है? यह सभी के लिए होनी चाहिए।

• जो स्त्री प्यार करती है और प्यार पाती है वह तारों भरे आसमान की तरह सुंदरता बिखेरती है, चाहे वह गोरी हो या काली। सभी स्त्रियाँ सुंदर होती हैं। कुछ दूसरों की तुलना में अधिक सुंदर हो सकती हैं।

• आर्थिक बराबरी होने पर जाति व्यवस्था खुद खत्म होगी और सामाजिक बराबरी स्थापित होगी।

• जब तक सत्ता केन्द्र से हटकर राज्य जिला और ग्राम तक समान रूप से नहीं पहुँचेगी, तब तक साधनों का सही बँटवारा नहीं होगा।

• नारी पर लगे हुए बन्धन समाज के बहुतेरे अन्यायों की जड़ में हैं और पुरुष भी तब तक स्वतंत्र नहीं हो सकता जब तक नारी उतनी ही स्वतंत्र न हो।

• मनुष्य को अन्याय का विरोध करने का अधिकार है, चाहे वह जिस तरीके से हो।

• लोकतंत्र में सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा को अनुचित मानने का मतलब होगा भक्त प्रहलाद, चार्वाक, सुकरात, और गाँधी जैसे सत्याग्रहियों की परंपरा को नकारना।

• हिन्दुस्तान जब उठा तो उसने सारी दुनिया को कुछ दिया ही दिया, उससे कुछ लिया नहीं, और गिरा तो सारी दुनिया की जूठन बटोरता रहा। उसके पास किसी को देने के लिए कुछ नहीं रहा।

भारत स्वातन्त्र्य और ऋषि दयानन्द-1

-सत्यप्रिय शास्त्री

वैदिक सभ्यता के आरम्भ से लेकर महाभारत तक आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य रहा, परन्तु आर्यों के आलस्य, प्रमाद और आपस की फूट के रूप में महाभारत के युद्ध के साथ उस स्वर्णिम अध्याय की समाप्ति हुई और तत्पश्चात् वैदिक दासता का युग आरम्भ हुआ, जिसमें विदेशियों की संगति ने आर्यों के जीवन को वैदिक मान्यताओं से सर्वथा शून्य कर दिया था। इस प्रकार दीन-हीन हुई आर्य जाति किसी प्रखर सुधारक की प्रतीक्षा में ही थी कि ऐसे काल में गुजरात के टंकारा नगर में 1824 ई. में ऋषि दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। वे शैशव से सर्वविध रूढ़िवाद के घोर विरोधी थे। इसी चिन्तन प्रणाली और कार्यपद्धति ने उन्हें बालक मूलशंकर से उठाकर देशोद्धारक ऋषि दयानन्द सरस्वती सरस्वती के रूप में विश्व के मञ्च पर ला बिठाया, जिसका प्रमाण उन्होंने अपने आगामी जीवन में भारत में राजनीतिक जागरण के बीज पनपने में प्रयत्नशील हो रहे थे। उनके दीक्षा-गुरु स्वामी पूर्णानन्दजी तथा विद्या-गुरु स्वा. विरजानन्दजी राजनीतिक जागरण के कार्यों से संलग्न थे।

1857 और ऋषि दयानन्द

ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश में 1857 ई. का उल्लेख एक ही स्थान पर आया है- "जब संवत् 1914 के वर्ष में तोपों के मारे मन्दिर मूर्तियाँ अंग्रेजों ने उड़ा दी थीं, तब मूर्ति कहाँ गयी थीं, प्रत्युत बाघेर लोग जितनी वीरता से लड़े, शत्रुओं को मारा, परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टाँग भी न

तोड़ सकी। जो श्रीकृष्ण क `सदृश कोई होता तो इनके धुर्रे उड़ा देता और वे भागते फिरते। भला वह तो कहो कि जिसका रक्षक मार खाय, शरणागत क्यों न पीटे जायें।"

स्पष्ट है कि स्वामीजी के विचार मूर्तियों और मूर्तिपूजकों की ओर से स्पष्ट थे। स्वामीजी ने पूना प्रवचन में जो विवरण दिया है, उससे स्पष्ट होता है कि मथुरा आने से पूर्व स्वामी विरजानन्द से उनकी कभी कोई भेंट नहीं हुई थी, और न उसमें कोई संकेत है कि विरजानन्द जी ने 1857 की क्रान्ति में कोई भाग लिया।

फिर भी कुछ लोगों की कल्पना है कि छिपे छिपे स्वामी दयानन्द, स्वामी पूर्णानन्दजी और स्वामी विरजानन्द ने 1857 ई. के विद्रोह में सक्रिय भाग लिया था। जे.टी.एफ. जोरडेन्स ने बड़े परिश्रम से स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध में जो पुस्तक लिखी है उसके प्रथम परिशिष्ट में उन्होंने एक टिप्पणी दी है, 1857-60ई में वृत्त के सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द ने स्वयं कुछ नहीं कहा। 1857 के प्रारंभ में वे नर्मदा के स्रोत की खोज में निकल पड़े थे और 1860 में फिर वे मथुरा आये। (इस सम्बन्ध में जिन पुस्तकों में 1857 के विद्रोह में ऋषि के सहयोग का उल्लेख प्रारम्भ हुआ वे हैं- स्वामी वेदानन्द का विरजानन्द-चरित, श्री सत्यप्रिय शास्त्री का भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम में आर्यसमाज का योगदान, श्री पिंडीदास ज्ञानी का "1857 के स्वातन्त्र्य संग्राम के स्वाराज्य प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का क्रियात्मक योगदान" (1871)। इन ग्रन्थों में संकेत है कि 1855 के कुम्भ मेले में ऋषि दयानन्द की भेंट विद्रोहकारी नेताओं से हुई थी। इस विचारधारा को पं. दीनबन्धु शास्त्री और स्वामी सच्चिदानन्द

योगी को पुस्तक "योगी का आत्चरित–31 वर्ष की अज्ञातजीवनी" ने विशेष प्रोत्साहन दिया। कहा गया कि यह वार्ता स्वामी दयानन्द ने स्वयं अपने कलकत्ता–प्रवास के अवसर पर बताई थी। 12 बंगालियों ने इसे लिखा था, और उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि वे इस रहस्य का स्वामीजी के जीवित रहने तक किसी से उल्लेख नहीं करेंगे। दीनबन्धु जी ने इस वार्ता में यह भी लिखा है कि महर्षिं तिब्बत, हिमालय, कन्याकुमारी, सभी स्थानों में गए थे। (योग के चमत्कार से)। इन वार्ताओं का खण्डन "परोपकारी" के अंकों में, जून–जुलाई 1972, और और अक्टूबर–नवम्बर 1973 के अंकों में हो चुका है। यह सब गप्पें उसी प्रकार अविश्वसनीय हैं, जैसी कि निकोलस नोटोविच की बातें जो उसने 'द अन–नॉन लाईफ ऑफ क्राईस्ट' में लिखी हैं(1893)। जोरडेन्स के एक शिष्य आर. थ्वैटेस ने एक थीसिस (बी. ए. ऑनर्स परीक्षा की) इसी विषय पर लिखी–दयानन्द सरस्वती एण्ड दी स्पॉय म्यूटीनी ऑफ 1857; उसमें उन्होंने यह बताया कि जिस अज़ीमुल्ला खाँ की 1855 में स्वामी दयानन्द से कुम्भ में भेंट बताई गई है, वह जुलाई 1855 तक क्रीमिया में था और इंग्लैण्ड से भारत पहुँचा ही नहीं था। इन सब बातों से यह परिणाम निकलता है कि 1857 के राजविद्रोह से स्वामी दयानन्द का कोई सम्बन्ध न था। स्वामी दयानन्द की गरिमा में कोई अंतरनहीं पड़ता यदि वे 1857 के विद्रोह से उपेक्षित रहे। विद्रोह की असफलता से यह बात तो स्पष्ट हो गयी कि भारत दयानन्द जी की समग्र क्रान्ति के पक्ष में थे, जिसकी प्रेरणा उन्होंने गुरु विरजानन्द

से पाई और जिसके लिए इन्होंने जीवन का उत्सर्ग किया। 1857 वाली किम्वदन्ती की पुष्टि मीरमुश्ताक अहमद के उर्दू पत्र से भी की जाती है जो कि सर्व-खाप पंचायत सोरों (मुज़फ्फरनगर) में सुरक्षित बताया जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के सम्बन्ध में भावुकताओं से सतर्क रहने की आवश्यकता है।

साहित्यद्वारा जागृति

1857 वाले सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण) में स्वामी दयानन्द ने नमक तथा जंगली लकड़ी पर लगे प्रतिबन्ध की कठोर शब्दों में भर्त्सना की थी। जब कि कांग्रेस के द्वारा 1931 के आन्दोलन में इसे मुख्य मुद्दा बनाकर अंग्रेजी सरकार से संघर्ष किया गया। 1882 में ही महर्षि ने अंग्रेजी अदालतों पर अविश्वास प्रकट कर दिया था। जब कि कांग्रेस के सामने यह तथ्य 1919 में तिलक द्वारा मि. शिरोल पर चलाये गये मानहानि के अभियोग के निर्णय से आया था, विदेशी राजा की अपेक्षा स्वदेशी राजा की उत्तमता ब्राह्म-समाजियों की देशभक्ति की समालोचना अंग्रेजों द्वारा भारत में बने जूते को भी अदालत में न घुसने देने की पीड़ा गोरक्षा के प्रश्न पर तत्कालीन सरकार की आलोचना, जब कि इसी प्रश्न पर 1857 की क्रान्ति हुई और इसी आधार पर 1872 में नामधारियों के गुरु रामसिंह को जलावतन किया गया था, गोरक्षा और सरकार विद्रोह पर्यायवाची बन गये थे, ऐसे समय में गोहत्या की सारी जिम्मेदारी सरकार पर डालना स्तुति-गौरव का सविस्तार वर्णन, ये सभी लेख महर्षि दयानन्द की उत्कट देशभक्ति एवं राजनीतिक पुनर्जागरण के महत्त्वपूर्ण दस्तावेज हैं, जिन्होंने आने वाले समय में भारत को वैचारिक क्रान्ति

में अनुपम योगदान देकर आगामी स्वतन्त्रता संग्राम लड़ने के लिए सशक्त तथा समुद्यत किया था, इसे कोई नकार नहीं सकता है। इसी प्रकार कांग्रेस के काल में देशभक्तों की पहचान खादी का वेश रहा था, परन्तु महर्षि दयानन्द के जो वस्त्र अजमेर में रखे हैं वे सभी विशुद्ध देशी खादी के ही है, जब कि कांग्रेस के मंच पर खादी का सबसे प्रथम क्रियात्मक प्रयोग 1921 के अहमदाबाद अधिवेशन के समय दृष्टिगोचर हुआ था। कलकत्ता में तत्कालीन वायसराय नार्थब्रुक से महर्षि दयानन्द की भेंट होने, वायसराय द्वारा महर्षि से अपने भाषणों के आरम्भ में परमेश्वर मे से अंग्रेज राज्य की भारत में स्थिरता के हेतु प्रार्थना का संकेत देने पर महर्षि का न केवल दृढ़तापूर्वक इनकार करना प्रत्युत उक्त साम्राज्य को जल्दी ही दूर होने की अपनी हार्दिक भाव की व्यञ्जना भी ऋषि दयानन्द सरस्वती की ज्वलन्त राष्ट्रभक्ति का वज्र प्रमाण है। अपने जीवन काल में ऋषि का सभी आर्यसमाज सैनिक आवासों वाले नगरों में ही स्थापित करना कोई अचानक संयोग मात्र नहीं है। अपने जीवन के अन्तिम काल में राजस्थान के राजाओं से निकट संपर्क करना, वहाँ के स्वाधीनता प्रेमी रक्त में अंग्रेजी निजात हासिल करने के गुप्त अभिप्राय का सूचक है, जिसका प्रभाव आगामी पृष्ठों से निश्चित हो सकेगा, चुंकि इससे साधुओं की विद्रोही भावना को देखते हुए विदेशी सरकार इस प्रकार राष्ट्रभक्त साधु को कैसे सहन कर सकती थी?

(स्रोत : महर्षि दयानन्द निर्वाणशती स्मृति ग्रन्थ.1983)

Bhopal Engineering Students to Trace roots of science in Vedas

-Shruti Tomar

Engineering students of Atal Bihari Vajpayee Hindi University in Bhopal will soon trace the roots of modren science in Indian ancient texts–the Vedas, and writings of bygone-era mathematician Bhaskaracharya and sage scientist Acharya Kanad.

The university, in a first, is preparing a curriculum in Hindi, which will allow students to gain knowledge of engineering that prevailed in the sub-continent in ancient times, and chroniclled by seers and sages who doubled up as men of science.

"Whenever we talk about our rich legacy of Hindu Rishis and Munis, people oppose it. But it is a fact that Indian seers came out with many inventions in engineering, medical science and astronomy thousands of years ago," Vice-chancellor Mohan Lal Chhipa said.

"We will teach about Indian scientists before any western scientist."

University sources said the sole purpose of the programme is to promote Indian science and culture, which has been overshadowed by western science.

Students will be taught how Indian sage-scientists were in no way inferior to, if not greater than, western greats such as JJ Thomson, John Dalton, Gerhard Bernsee, George Stibiz, and Lord Kelvin.

The neo-nationalistic approach stems from the lack of knowledge of modern students about the scientific shlokas or couplets in Sanskrit mentioned in the Vedas.

Hence, the Hindi curriculum. "In India, students are aware of John Dalton, but not Acharya Kanad (considered the father of atomic theory in Sanskrit)". a university official said.

The programme will be an additional subject, titled Bharatiya Gyan aur Parampara (Indian Knowledge and Tradition), to be introduced this academic session. But the students will not have to take any examination on the new subject.

Besides the Vedas, the earliest scriptures of Hinduism, works of sage Bhrigu's Shilp Samhita on engineering science and metallurgy, the Narad Shilp Shastra on arts and crafts, and Charaka Samhita that deals with Ayurvedic healing, will be part of the reading material.

Experts called the programme an attempt to promote Hinduism, not engineering.

"This additional subject will create confusion among students and is also going to distort their view on the subject," a professor with a national institute said.

This could trigger debates because international-level examinations demand a student to write what has been scientifically proven and established, not untested theories that spring from mythology, he added.

मनोनियंत्रण

• सुख, स्वातन्त्रता, निर्भयता, आदि की सतत अनुभूति होने और आत्मशद्धि के लिए आवश्यक है कि मन पर सदा नियन्त्रण रहे।

• मन के रुकते ही सब इंद्रियाँ अपने विषयों की ओर दौड़ लगाना बन्द कर देती हैं।

• एकांत में एकाग्रता अधिक होगी, यदि स्मृति न उठायें तो। क्योंकि एकान्त मे नये आलम्बन उपस्थित नहीं होते हैं।

• जिसकी संसार में रूचि है उसे मनोनियंत्रण करते समय संघर्ष करना पड़ता है, फलतः शीघ्र ही थकान होती है।

• वितर्कों को न उठने देना चाहते हैं तो पहले से ही मन बुद्धि पर नियंत्रण रखना होगा।

–पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक

GASPING FOR A SOLUTION

The citizens are concerned about Delhi's air pollution. But the political will to take drastic measures is lacking In the last few months, New Delhi has been at the receiving end for its abysmal air quality. While this has been the case for quite some time now, the issue became a talking case for quite some time now, the issue became a talking point before United States Ex-President Barack Obama's visit in January. This was because the US embassy bought 1,800 portable indoor air purifiers for the dignitary, his team and their staff. Reports said that the embassies of the US, Japan and Germany were contemplating a reduction in the three year standard tenure for their diplomatic staff to two years because of concerns over poor air quality.

Under attack from all sides, the Centre finally reacted, rather took cover behind a new monitoring protocol. It said that the the environment ministry along with the earth sciences ministry, has put in place a unified system of air quality monitoring in the city to ensure authenticated air quality information to the public. Now a Standard Operating Procedure for data validation, analysis and dissemination will be followed by the Central Pollution Control Board, Delhi Pollution Control Committee and Indian Meteorological Department. An environment ministry official told the Wall Street Journal that the goal of the new procedure was to counter "irresponsible media reporting about pollution",

adding that the media were focusing wrongly on real time data on pollution and using them to hype the city's problems with air quality. The Centre is also mulling restricting the entry of diesel vehicles in Delhi's markets. This is a welcome move but along with it should quicken the pace of constructing the east and west expressways so that vehicles that are not Delhi-bound can bypass the city.

Moreover, the government needs to find ways to curb the rising popularity of diesel vehicles. While the citizens are concerned about the air quality, there seems to be a lack of political will in cleaning up the air. The budget failed to make any allocations or fiscal measures to control air pollution. The least it could have done was to use excise duty on petrol and diesel to fund the implementation of superior quality fuel (Euro IV and Euro V) instead of allocating it for developing roads. Taxing SUVs could also have helped reduce dependence on private vehicles and create a fund for public transport instead.

अकर्मण्यता के रूप

गंगा के घाट पर सैकड़ों तीर्थ यात्री स्नान कर रहे थे। लेकिन एक आदमी तट पर बैठा-बैठा कुछ सोच रहा था। कुछ साधु स्नान करके बाहर निकले। एक साधु ने किनारे बैठे आदमी के पास जाकर पूछा, 'तुम भी तो स्नान करने आए हो, फिर तट पर क्यों बैठे हो? उतरो नदी में और स्नान करके पुण्य कमाओ।' वह आदमी बोला, 'मैं अभी नदी में अभी नहीं उतरूँगा।' साधु बोला, 'लेकिन क्यों?' उस आदमी ने उत्तर दिया जब तक नदी में लहरें उठ रही हैं, थपेड़े मार रहीं हैं तब तक मै पानी में नहीं जाऊँगा। जब तरंगे शान्त हो जाएँगी तब स्नान करने उतरूँगा। साधु ने हंसते हुए उस आदमी को समझाया, 'भले आदमी! पानी में तो लहरें उठती ही रहेंगी। वे कब शान्त होने वाली हैं?' स्नान करके पुण्य लाभ प्राप्त करना हो तो पानी में उतर जाओ। ये लहरें तुम्हारे लिए बाधक नहीं बनेंगी। असल में तुम्हारी अकर्मण्यता तुम्हारे लिए बाधा उपस्थित कर रही है। इसे दूर करो, मचलती लहरें तुम्हारी दोस्त बन जाएँगी।

Date of Pubn. : 31.7.2017 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3Aug. 2017
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2017-2019

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।।
ऋषिः–दीर्घतमा, देवताः–आत्मा, छन्दः–अनुष्टुप

वह परमात्मा संपूर्ण संसार को गतिशील करता है परन्तु वह स्वयं चलायमान नहीं होता। वह अविद्वान्, नास्तिक, अधर्मात्मा लोगों से दूर रहता है। अतः वे उसे प्राप्त नहीं कर सकते। परन्तु वह ब्रह्म सत्यवादी, जितेन्द्रिय, विद्वान् और आस्तिक लोगों के हृदय में एकदम निकट स्थित है। वह सब प्राणियों में अन्तर्यामी भीतर–बाहर व्याप्त है इसलिए उसी को जानने से सुख की प्राप्ति और मुक्ति मिलती है। हे मनुष्य! तू उस सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी प्रभु की उपासना कर।

That Almighty God keeps the whole world in motion but He Himself does not move. But He being perfectly immanent every where and in every creature. He is permeating everything in this universe in a uniform and immovable manner. The Supreme Being is very far away from those people who are unrighteous, thoughtless and not devoted to God. He is extremely near to those learned and wisemen who speak truth. God is everywhere-outside, inside and in the middle of the whole world. He is permeating everywhere in His Entirety, in a uniform manner. Only by knowing Him one can attain final beatitude and not otherwise.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58